कबीर की उलटवांसी

डॉ0 नित्यानंद सिंह

'उलटवांसी' शब्द में प्रायः 'वांसी' शब्द को लेकर विद्वानों में मतभेद बना रहा है। इसके व्युत्पत्ति अर्थ से पूर्व इस शब्द–प्रयोग के लिए ही सभी विद्वानों ने अलग–अलग शब्दों के समर्थन में अपने तर्क प्रस्तुत किए हैं। सामान्यतः 'वांसी' शब्द के लिए बांसी, वाशी, वासी, वाची शब्द चर्चा का विषय बने। डॉ0 रमेशचन्द्र मिश्र ने उक्त सभी शब्दों पर भाषा वैज्ञानिक तथा व्याकरणिक दृष्टि से विस्तार में जाकर चर्चा करते हुए निष्कर्ष दिया कि 'वाशी या वासी शब्द सामान्य ध्वनि या वाणी के लिए प्रयुक्त मिलता है। इस प्रकार उलटवाशी या उलटवासी उलटी वाणी के रूप में प्रचलित हुआ होगा, जिसका 'उलट' पद हिन्दी का तथा वाशी या वासी शब्द परंपरागत वैदिक मूल का है। ऐसी वाणी प्रचलन में विवेच्य शैली के लिए स्वीकृत हुई। उलटवाशी या उलटवांसी में कथन उलटा–सा रहता है। मानक हिन्दीकोश में 'उलटवासी' शब्द के लिए 'उलटवाची' शब्द का भी प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है ऐसी उक्ति या कथन (विशेषतः पद्यात्मक) जिसमें संगति, विचित्र, विभावना, विषम, विशेषोक्ति आदि अलंकारों से युक्त ऐसी विलक्षण बात कही जाती है जो प्राकृतिक नियम या लोक–व्यवहार के विपरीत होने पर भी गूढ़ आशय या तत्व से युक्त होती है।